जाटों का नवीन इतिहास

अनुक्रमणिका

अध्याय		पृष्ठ
	आशीर्वाद	५
	प्रस्तावना	७–११
	अनुक्रमणिका	१३–१५
१.	विषय प्रवेश [१. भौगोलिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, २. जटवाड़ा प्रदेश का प्राकृतिक विभाजन, ३. भौगोलिक स्थिति, बनावट तथा उत्पादन, ४. भरतपुर राज्य का क्रमिक विकास, ५. प्रजातन्त्र की ओर, ६. प्रशासनिक विभाजन ७. प्रमुख जातियाँ तथा नगर]।	१७–३४
२.	जाटों की उत्पत्ति तथा विस्तार [१. यादवकुलीन जाट और उनका पलायन, २. परिभ्रमक जाट परिवार, ३. भारतीय जाटों का क्रमिक विकास, ४. जाटों का स्वभाव तथा सामाजिक व्यवस्था, ५. ब्रज जनपद के यादवकुलीन परिवार, ६. जादौ कुलीन जाटों की उत्पत्ति और विस्तार]।	३५–६७
३.	सम्राट शाहजहाँ के शासन में जाटों का प्रभावकारी संगठन (१६२८–३०ई०) [१. ब्रजमण्डल में जाट परिवारों का प्रवेश तथा विस्तार, २. शाहजहाँ शासन में जाटों के क्रान्तिकारी प्रयास]।	६८–८२
४.	वीरवर गोकुला जाट (१६५७–७० ई०) [१. सम्राट औरंगजेब का ठेनुआँ जाटों को सन्तुष्ट करना, २. औरंगजेब की धार्मिक नीति का ब्रज मण्डल पर प्रभाव, ३. गोकुला जाट और जाट संगठन, ४. गोकुला की मुगल फौजदारों से टक्कर, ५. तिलपत युद्ध और उसका परिणाम]	८३–८९

५. **राजाराम जाट का मुगलों के साथ संघर्ष (१६७०–८८ ई०)** ९९–१२३

[१. ठाकुर ब्रजराज तथा भज्जा का भाग्योदय, २. राजाराम की संगठन क्षमता, ३. सिनसिनवार और सोगरिया जाटों का संगठित होना, ४. मुगल सेनापति और क्रान्तिकारियों की मुठभेड़, ५. शाहजादा बेदारबख्त के प्रयास और राजाराम मृत्यु] ।

६. **वृद्ध भज्जा, जोरावर और फतहसिंह (१६८८–९५ ई०)** १२४–१७९

[१. अनुभवहीन नेतृत्व और बेदारबख्त के प्रयास, २. सिनसिनी दुर्ग का घेरा तथा पतन, ३. अन्य जाट गढ़ियों पर साम्राज्यवादियों का अधिकार ४. कछवाहा जाट संघर्ष की विभीषिका, ५ जाटों के सहयोगी राजपूत मित्रों का पतन, ६. विद्रोही जाट सरदारों का पीछा करना] ।

७. **सरदार भज्जा और ब्रजराज (१६९५–१७०२ ई०)** १८०–१८६

[१. ब्रजराज और उनका परिवार] ।

८. **युग निर्माता ठाकुर चूरामन जाट (१७०१–२१ ई०)** १८७–२७३

[१ चूरामन का संघर्षमय जीवन और संगठन कार्य, २. जाजऊ युद्ध और चूरामन का मनसबदारी प्राप्त करना, ३. मुगल फौजदारों की सहायता करना और राजपूतों का दबाना, ४. सिख आन्दोलन और लाहौर युद्ध में चूरामन का योग, ५. सम्राट जहाँदार शाह द्वारा जाटों को अपने पक्ष में मिलाना, ६. 'राव बहादुर खाँ' की उपाधि तथा राहदारी अधिकार, ७. राहदारी कर की वसूली में कड़ाई और लूटमार की भयंकरता, ८. राजाधिराज जयसिंह को आमन्त्रण तथा चूरामन विरोधी अभियान की तैयारियां, ९. थून गढ़ी का प्रथम घेरा और साम्राज्यवादियों की पराजय, १७१६–१८ ई०] ।

९. **राव चूरामन और सैयिदों की अनन्यन मित्रता (१७१८–२१ ई०)** २७४–३०७

[१ सम्राट फर्रूखसियर को गद्दी से उतारने में योग, २. आगरा विद्रोह को कुचलने में चूरामन का योग, ३. सम्राट मुहम्मद शाह से ठाकुर पद प्राप्त करना, ४. हसनपुर युद्ध में वजीर अब्दुल्ला खाँ का पक्ष ग्रहण करना, ५. राठौड़ तथा बुन्देला राजपूतों की सहायता करना, ६. नीलकण्ठ नागर की मृत्यु और सआदत खाँ की विफलता, ७. ठाकुर चूरामन की मृत्यु] ।

१०. ठाकुर चूरामन के उत्तराधिकारी और भरतपुर राज्य की स्थापना (१७२१–२२ ई०) ३०८–३२३

[१. उत्तराधिकारी मोहकमसिंह ने अपने भाई बदनसिंह को बन्दी बनाया, २. आमेर नरेश सवाई जयसिंह को आगरा की सूबेदारी प्रदान करना, ३. थून गढ़ी की विजय और मोहकम सिंह का जोधपुर में शरण लेना, ४. विजय का परिणाम– भरतपुर राज्य की स्थापना, १७२३ ई०] ।

११. परिशिष्ट —

१. भरतपुर— एक परिचय ३२५–३३८

२. चन्दवंशी राजपूत ३३९–३४०

३ सिनसिनवार जाट वंश ३४१–३४४

४. हलैना पथैना के सिनसिनवार जाट ३४५–३५३

५. अवार गढ़ी के सिनसिनवार जाट ३५४–३५८

१२. संकेत और सन्दर्भ तालिका ३५९–३७६